हिन्दी विभाग

स्नातक द्वितीय (II)

दिनांक 24/08/2020

पत्र संख्या :- 03 (III)

बैनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)

छायावाद

प्रश्न :- 'छायावादी दृष्टिकोण व्यक्तिनिष्ठ है'। विचार कीजिए।

उत्तर :- छायावाद ने हिन्दी आलोचकों तथा पाठकों को सबसे अधिक ~~आकर्षि~~ आकर्षित किया। इसके आरंभिक समय में ही विद्वानों तथा आलोचकों के बीच परस्पर विरोधी धारणाएँ तथा विचार उत्पन्न हुए। आरंभ में नयी शैली की कविता के लिए मुकुटधर पाण्डेय के द्वारा व्यंग्य रूप में छायावाद नाम का प्रयोग किया गया। छायावाद के इर्द-गिर्द सृजनात्मक बहस इतनी अधिक हुई कि यह नाम धीरे-धीरे सटीक होता गया। हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा 'बंगला में अध्यात्मवादी रचनाओं को छायावाद कहा जाता है ~~अतः~~ उसी के अनुकरण पर हिन्दी साहित्य में ऐसी रचनाओं के लिए छायावाद नाम चल पड़ा।" परन्तु हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस बात का खण्डन किया। उनका कहना है कि बंगला में छायावाद नाम से कविता का कोई आन्दोलन नहीं रहा। डॉ० नगेन्द्र का विचार है कि 'छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है। जीवन के प्रति एक विशेष भावनात्मक ~~दृ~~ दृष्टिकोण है। यह स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।' रामविलास शर्मा का विचार है कि छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह नहीं बल्कि थोथी नैतिकता, ~~रूढ़ि~~ रूढ़ीवाद और सामंती साम्राज्यवादी बंधनों के प्रति विद्रोह रहा है। परन्तु यह विद्रोह मध्यवर्ग के तत्वाधान में हुआ था। इसलीए उनके साथ मध्यवर्गीय असंगति, पराजय और पलायन की भावना

जुड़ी हुई थी।' डॉ० रामकुमार वर्मा इसकी रहस्यात्मक प्रवृत्ति के आधार पर इसकी परिभाषा सुनिश्चित करते हैं। परमात्मा की छाया आत्म पर पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा पर पड़ने लगती है यही छायावाद है।'

छायावादी कवियों ने स्वयं इसके संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं इसमें प्रसाद जी का मत विशेष उल्लेखनीय है। मोती के भीतर छाया जैसी तरलता होती है वैसे ही कवि की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर निर्भर करती है। स्वप्नात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक-विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की विकृति छायावाद की विशेषताएँ हैं।

छायावाद की विशेषता दो विश्व युद्धों के बीच की कविता है इस समय भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के सूत्रधार गाँधी जी थे। उनके सत्याग्रह आन्दोलन की असफलता अंग्रेजों द्वारा किये गये वादों के न पूरे होने से उत्पन्न निराशा अवज्ञा आन्दोलन की असफलता आदि के प्रभाव से छायावादी कवियों में आन्तरिक वेदना, राजनीतिक स्वतंत्रता के बदले वैयक्तिक स्वतंत्रता की भावना विकसित हुई। नवीन शिक्षा पद्धति, अंग्रेजी से प्रभावित बंगला साहित्य के संघात तथा औद्योगिकता एवं भौतिकता की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप व्यक्ति भावना जाग्रत ही नहीं हो रही थी बल्कि उद्दीप्त हो रही थी। इस युग के पूर्व द्विवेदी युगीन नैतिकता जनमानस को आक्रांत कर रही थी। इसलिए छायावादी कविता

में उन्मुक्त प्रेम की संवेदना की प्रतिक्रिया स्वरूप विशेष आग्रह मिला। द्विवेदी युगीन यथार्थपरक इतिवृत्तात्मकता एवं स्थूल के वर्णन के विरोध में सूक्ष्म काल्पनिक तथा लाक्षणिक चित्रण को विशेष रूप से अपनाया गया है। छायावादी कविता में आत्मीय अस्मिता की भाववादी तलाश, प्रचलित रूढ़ियों और वर्जनाओं से मुक्त दृष्टि अपने व्यक्तित्व की मानवीय धरातल पर आध्यात्मिक संस्पर्श के साथ प्रतिष्ठित करने की चेष्टा छायावादी कविता में मिलती है। छायावादी कवि भारतीय अद्वैतवाद तथा सर्वात्मवाद से प्रभावित है।

छायावाद पर अंग्रेजी की रोमैंटिक कविताओं का प्रभाव तो है, किन्तु वह उतना स्वच्छंदतावादी नहीं है जितना पुनरुत्थानवादी। इस पर रीतिकालीन कविता का प्रभाव भी किसी न किसी रूप में दृष्टिगोचर होता है। रसवाद, दार्शनिकता आदि ऐसे तत्व हैं जो उसे प्राचीनता से भी जोड़ते हैं। छायावाद में जिस व्यक्तिवाद की अभिव्यक्ति हुई है वह व्यक्तिवाद समष्टि को समाहित किये हुए है। उनकी व्यक्ति वेदना के प्रकाश में सम्पूर्ण विश्व की कविता निहित है। प्रसाद ने 'आँसू', पंत ने 'उच्छ्वास' इसी तरह की भावना को अंकित किया गया है। निराला ने कहा कि 'मैंने 'मैं' शैली अपनाई देखा एक दुःखी निज भाई।' प्रकृति चित्रण में छायावादी कवि की वृत्ति खूब रमती है। उसी प्रकृति को

निर्जीव सत्ता के रूप में न देखकर सचेतन रूप में दृष्टिगत किया। प्रकृति के विविध स्पन्दन में वह जीवन के स्पन्दन का दर्शन करता है। छायावादी प्रकृति चित्रण आलम्बन रूप में ही नहीं बल्कि नई भंगिमा लिए हुए है इसीलिए उसका प्रभाव बहुत मार्मिक है। प्रकृति के मानवीकरण का एक दृश्य प्रस्तुत है। पगली हाँ! सम्भाल ले, कैसे छूट पड़ा तेरा आँचल।

प्रसाद जी ने भाषा में प्रकृति तत्व को मिलाया, निराला ने मुक्त छंद दिया। पंत ने शब्दों को खराद कर सुडौल तथा सरस बनाया। महादेवी ने उसमें प्राण डाले और उसकी भावनात्मकता को समृद्ध किया। अप्रस्तुत विधान लाक्षणिक, शब्दावली मूर्त से अमूर्त की व्यंजना छायावादी काव्य की कलात्मक विशेषताएँ हैं। छायावादी कवियों ने मुक्त छंद का प्रयोग करते हुए भी उनमें नये संगीत और लय की प्रतिष्ठा की।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० - 8292271041
ईमेल :- benamkumar13@gmail.com

दिनांक 24/08/2020